रिकॉर्डः–किसने यह सब खेल रचाया..... ॐ पिताश्री 2/9/1964
ऊँ शान्ति। यह वास्तव में भक्तिमार्ग का गीत है। कोई है ज़रूर जिसकी यह महिमा है। बच्चे अच्छी रीति समझ सकते हैं कि यह बाप ही है जो सब कुछ करते हैं। करन करावनहार है। महिमा बहुत गाते हैं सिक्ख लोग; क्योंकि ..... धर्म है। यह है बहुत पुराना धर्म। गाते हैं एको ओंकार। बाप भी कहते हैं। ऊँ जय राम का अर्थ बाबा ने बहुत अच्छी रीति समझाया है। वह तो बहुत लम्बा–चौड़ा अर्थ कर लेते हैं। मैं कहता हूँ– आई एम परम आत्मा। मैं परमधाम में रहने वाला हूँ। मैं पुनर्जन्म में नहीं आता, तुम पुनर्जन्म में आते हो। बाप बच्चों को बैठ परिचय देते हैं, कहते हैं– मैं बच्चों के सामने ही प्रत्यक्ष हूँ। इन्हों को समझाता हूँ। मैं हूँ प०पि०प०, जिसको तुम आत्माएँ भक्तिमार्ग में याद करती आई हो– ओ गॉड फादर! उनकी महिमा भी है– पतित–पावन, रहमदिल, लिबरेटर। उनको गाइड भी कहते हैं। यह है पांडव सेना। पंडा मुक्ति–जीवनमुक्ति का रास्ता बताता है। गाते भी हैं– नैया पार लगाए, मैं बहुत पापी हूँ। एक सिंधी में पहाका है। बरोबर परमात्मा को खवैया भी कहते हैं। बागवान भी कहते हैं। कहते हैं– तुम

..... कितने मस्त थे सतयुग–त्रेता में। बेपरवाह बादशाह थे। कितने वैभव थे! श्रीनाथ द्वारे में बहुत वैभव खिलाते हैं, पक्की रसोई बनाते हैं और जगन्नाथ के मंदिर में सिर्फ दाल और चावल बनते हैं। वहाँ काले चित्र दिखाते हैं। इस समय तुम काले हो। श्रीनाथ के मंदिर में बहुत फर्स्ट क्लास चीज़ें मिलती हैं। फिर जो श्रीनाथ को भोग लगता है वो पुजारियों को मिलता है। वो लोग फिर दूकान निकाल बेचते हैं। इनसे शरीर निर्वाह होता है। तुम बच्चे स्वर्ग के मालिक बनते हो। वहाँ जो वैभव तुम खाते हो वो दास–दासियाँ खाते हैं। 36 प्रकार के वैभव बनते हैं। इतने तो खाय न सकेंगे तो फिर दास–दासियाँ खाते हैं; परन्तु इसमें खुश न होना चाहिए। राजधानी तो सारी बननी ही है। तुम वहाँ बहुत मौज में रहेंगे। स्वर्ग तो फिर क्या! वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी का स्थापन किया हुआ स्वर्ग का राजभाग तुम बच्चों को मिलता है। अभी तुम वर्थ नोट ए पैनी हो। कहते हैं– ज्ञान, भक्ति, वैराग। अब वैराग दो प्रकार का होता है। सन्यासियों का है हद का वैराग। घरबार छोड़ जाकर जंगल में बैठते हैं। फिर भी वो गुप्त मदद करते हैं, भारत का बहुत फायदा करते हैं; जैसे विनाश के लिए कहा जाता है– इनसे स्वर्ग के गेट्स खुलते हैं, वैसे वो भी पवित्रता की मदद करते हैं; इसलिए ड्रामा में इन्हों की महिमा है; परन्तु अभी फिर डिससर्विस करने लग पड़े हैं। आगे तो कहते थे, परमात्मा बेअन्त है। अभी तो कह देते परमात्मा सर्वव्यापी है। जबकि ल०ना० आदि देवताओं में ही ज्ञान नहीं तो शूद्रों में कैसे हो सकता है! बाप कहते हैं– ये ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। तो इनका है हद का वैराग, तुम्हारा है बेहद का। तुमको बेहद का बाप वैराग दिलाते हैं। गृहस्थ–व्यवहार में रहते सिर्फ बुद्धि से छोड़ना है। ये तो पुराना शरीर है। 84 जन्म पूरे हुए। तुम 5 विकारों का सन्यास करते हो। देह सहित देह के सब पुराने संबंधों को भूलना है। अपन को देही समझना है। वो तो कह देते– आत्मा निर्लेप है। कुछ भी खाओ–पीओ, लेप–छेप नहीं लगता। विवेकानंद मछली खाता था। अनेक मत–मतांतर हैं। कितने रसम–रिवाज़ हैं। जिसने जो मत चलाई, चल पड़ती है। जैसे यहाँ आदिदेव (को) कोई महावीर कहते हैं। महावीर फिर हनुमान को भी कहते हैं। वास्तव में तुम महावीर–महावीरनियाँ हो, जो माया पर जीत पाते हो, श्रीमत पर पुरुषार्थ करते हो। तुमको अपनी अवस्था ऐसी रखनी है, जैसे हनुमान को रावण हिलाय न सका। तुम महावीरों को भी भल कितना भी माया का तूफान लगे; परन्तु हिलना न है। यह अवस्था अभी नहीं होगी। पिछाड़ी में ऐसी अवस्था होनी है। कितने भी विकल्पों के तूफान आय, अडोल रहना है। अव्यभिचारी याद, और किसकी याद न आय, इसमें बहुत मेहनत करनी है। पिछाड़ी ही अडोल, अचल बन जावेंगे। अचलघर यादगार भी है ना। उन(से) ऊपर गुरु(शि)खर है। अभी तुम समझते हो, ऊँच ते ऊँच है शिवबाबा। वो है रचयिता। पहले–2 क्या रचयिते हैं, वो भी बुद्धि में रखना है। ऊँच ते ऊँच है शिवबाबा, फिर ब्र०वि०शं० सूक्ष्मवतनवासी। उनको 4 भुजाएँ क्यों देते हैं? यह प्रवृत्तिमार्ग सिद्ध होता है। तुम्हारा है पवित्र प्रवृत्तिमार्ग। ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराते हैं। ब्राह्मण कुल है ऊँच ते ऊँच। देवताओं (से) भी तुम ऊँच हो; क्योंकि तुम सर्विस करते हो। दैवी धर्म की स्थापना कर फिर तुम मालिक बनते हो। तो ऊँच ते ऊँच है एक बाप। प्रजा(पूजा) अथवा महिमा लायक एक ही शिव है, दूसरा न कोई। बर्थ डे भी एक शिवबाबा का ही मुख्य है। बाकी तो कोई भी सर्विस नहीं करते। ल०ना० भी प्रालब्ध भोगते हैं। इस समय सभी पतित हैं, कब्रदाखिल हैं। धर्म स्थापक आदि खुद भी पतित हैं तो उन्हों की संख्या भी पतित है। बाप आकर सबको कब्र से उठाते हैं। अब कयामत का समय है। पहले–2 भक्ति (भी) शुरू होती है एक बाप की। वो है अव्यभिचारी भक्ति। अभी तो देखो, बिल्कुल ही व्यभिचारी बन गए हैं। तुम शिवबाबा से लेकर सबके ऑक्युपेशन को जानते हो।

अभी तुम प्रैक्टिकल में बाबा के पास बैठे हो। जानते हो, हम फिर से भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। जो बनाते हैं वो ही फिर राज्य करेंगे। फिर वहाँ ल०ना० की डिनायस्टी चलती है। फिर राम की। अब उनकी क्या पूजा करेंगे! उनको तो नीचे उतरना ही है। प्रालब्ध भोग पूरी की। बस। तुम ही पूज्य सो पुजारी बनते हो। बाकी नाक वाला गणेश, पूँछ वाला हनुमान वा 8/10 भुजाओं वाली देवियाँ आदि कहाँ हैं? यह सब भक्तिमार्ग के बखेर हैं। तुम जानते हो, भक्तिमार्ग में क्या होता है, कैसे हम 63 जन्म लेते हैं। अभी तुम ब्राह्मण हो, फिर ब्राह्मण से देवता, फिर क्षत्रिय–वैश्य–शूद्र वर्णों (में) आवेंगे। यह ड्रामा अनादि बना हुआ है, कोई रोक नहीं सकता। बाजोली खेली जाती है ना। तीर्थों पर बाजोली खेलते जाते थे। आगे यात्रा का बहुत प्रभाव था। अभी तो अनेकानेक मतें निकल पड़ी हैं। सिवाय बाप के श्रीमत कोई मुक्ति–जीवनमुक्ति दे न सके। अब तुम्हारी एक आँख में मुक्ति, एक में जीवनमुक्ति है। बुद्धि कहती है हम लाइट हाउस हैं, सबको मुक्ति–जीवनमुक्ति का रास्ता बतलाते हैं। वो होती है स्टीमर की लाइट हाउस, तुम मनुष्यों की लाइट हाउस हो। पहले–2 जाना है स्वीट होम। अभी यह नाटक पूरा हो(ता) है। तुम बच्चे जानते हो, यह गीता आदि भी क्यों बनाते हैं, जो कच्चे हैं वो पढ़ कर पक्के बनें। बाकी यह तो जानते हो, यह सब खतम हो जावेंगे। फिर वो ही गीताएँ आदि निकलेंगी। गीता का एक श्लोक उठाय उनका अर्थ करते जाते हैं। गीता में तो है भगवानुवाच्य। भगवान ने सुनाई थी; परन्तु समझते नहीं। बाबा कहते हैं, इन शास्त्रों आदि से मैं नहीं मिलता। बाप कहते हैं, जब भक्ति पूरी होती है तब मैं आता हूँ। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। आधा कल्प रावण का राज्य देखने में नहीं आता है। बुद्धि से समझ सकते हैं। कहेंगे, इनमें काम का भूत, क्रोध का भूत है। यह अशुद्ध अक्षर सतयुग में नहीं काम आते। यहाँ तो एक/दो को गाली देते रहते– उल्लू, गधे का बच्चा। कोई सेंसीबुल बच्चे होते हैं तो कहते हैं– बाबा, हम गधा तो आप भी गधा। आप गधा हो क्या! (एक जज का मिसाल) तो यह सब बातें सतयुग में नहीं होती। तो कहते हैं अपना सब कुछ करके। क्या? अभी तुम समझते हो बाबा पतित–पावन, स्वर्ग का रचयिता, स्वर्ग रचकर फिर अपन को छुपाय लेते हैं। उनको कोई भी जान नहीं सकते। शिव का चित्र भी है; परन्तु कुछ पता नहीं, शिवबाबा कब आया? कैसे आया? ब्र०वि०शं० का क्या राज़ है? वो कहाँ रहते हैं? ल०ना० की सतयुग में इतनी ऊँच राजाई, कलियुग में तो कुछ है नहीं। कैसे वो राजाई पाते हैं, यह अब तुम समझते हैं। बच्चों को अच्छी रीति बाप से पढ़कर और फिर पढ़ाना है। बाप सब बच्चों को कहते हैं इन द्वारा कि मेरे सिकीलधे बच्चे, हे मेरे शालिग्रामों! मैं इस शरीर से तुमको समझाता हूँ। इस ब्रह्मा का तन लेता हूँ। ब्रह्मा से ब्राह्मण पैदा होते हैं। यह सब बातें और कोई नहीं जान सकते। तुम जानते हो। बरोबर अबलाओं पर अत्याचार भी होते हैं। और कोई सतसंग में ऐसी कोई को मनाह नहीं होती, यहाँ मनाह करते हैं। विख पर ही झगड़ा करते हैं, जिसके लिए ही बाप कहते हैं कि यह विख आदि–मध्य–अंत दुख देते हैं। यह है नम्बरवन दुश्मन। इन काम महाशत्रु को जीतो, जिसने तुमको आदि–मध्य–अंत दुख दिया है। इसलिए कहते हैं– पतित–पावन आओ। जानते हैं, हम पतित हैं तब तो पावन के आगे जाय माथा टेकते हैं। अब सन्यासी लोग तो घरबार छोड़कर जाते हैं। उनसे तो घृणा आनी चाहिए ना! यह तो स्त्री को विधवा बनाय जाते हैं, फिर हम उनको माथा कैसे टेकते हैं; परन्तु पवित्रता की कशिश होती है, इसलिए उन्हों का मर्तबा रखते हैं। वो भी समझते हैं, हमारे जैसा ऊँच भारत में कोई नहीं है। उन्हों को भी तुम शक्तियों ने ज्ञान बाण मारे हैं। अगर स्थूल बाणों की बात होती तो ऐसे थोड़े ही कहते। प०पि०प० ने बाण मरवाए हैं। यह है ज्ञान के बाण। तुम हो बी०के०कुमारियाँ। वो फिर ब्रह्मकुमार कह देते। कहते– ब्रह्म ही भगवान है। बाप कहते– यह तुम्हारा भ्रम है। अब सन्यासी लोग भी बहुत ही तुम्हारे पास आते हैं। बड़े–2 आदमी सन्यासियों पास जाते हैं, बोलते हैं– महात्मा जी, चलिए, हम आपको भोजन खिलावें। बहुत उन्हों की खातरी करते हैं। पवित्रता की निशानी है ना। आजकल तो बहुत डाकू आदि भी सन्यासी वेश धारण कर लेते हैं। तुम तो बिल्कुल सा(फ) हो और तुम हो भी राजऋषि। अभी तुम ऊपर से लेकर सब समझ गए हो। जानते हो, हम सो देवता ल०ना० बन प्रालब्ध भोगते हैं। (आधा) कल्प बाद पीछे बाहर वाले आते हैं। जब और–2 आते हैं तब लड़ाइयाँ आदि लगी हैं। यह भी सब ड्रामा है।

मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन, सृष्टि की आदि–मध्य–अंत को तुम जानकर नॉलेजफुल बन गए हो। चक्र को भी जान लिया है चक्रवर्ती राजा बनने लिए। भारत में डबल सिरताज राजा–रानी यह ल०ना० ही थे। सिंगल ताज वाले उन्हों को नमन करते हैं। पवित्रता की ताकत थी। सतयुग में थी वाइसलेस। सम्पूर्ण निर्विकारी थे। गाते भी हैं सर्वगुण सम्पन्न....। यह कौन गाते हैं? जो पुजारी विकारी हैं। भारत पर ही सारा खेल है। डबल सिरताज और सिंगल सिरताज। अभी तो ताज। तुम सारी सृष्टि चक्र को समझ गए हो। क्रियेटर, डायरैक्टर, मुख्य एक्टर कौन–2 हैं, तुम अभी जानते हो। फिर तुम देवता बन जावेंगे। माया की चिकन जो लगी हुई है वो धोई जाती है। बाप कहते हैं– मैं धोबी भी हूँ। बड़े ते बड़ा सोनार भी हूँ। तुम्हारे जेवर को (भट्ठी) में डालता हूँ फिर तुम सच्चे ज़ेवर बन जावेंगे। इनको जो भी टाइटल दो। बैरिस्टर भी है। तुमको 5 विकारों की ज़जीर से छुड़ाते हैं। लिबरेट करते हैं। तुम रावण के जेल में हो। जेल से छुड़ाने लिए वकालत सिखलाते हैं कि अपन को कैसे छुड़(ा)ओ। तो बाप कहते हैं– मैं अपना कार्य कर तुमको राजभाग दे फिर मैं गुम हो जाऊँगा। तुम सुखी बन जावेंगे, तुम राजधानी ले लेंगे फिर मैं निश्चिंत हो जाऊँगा, वानप्रस्थ में बैठ जाऊँगा। आजकल तो देखो, 70/80 वर्ष वाले भी विख को छोड़ते नहीं। नहीं तो कायदा है 60 वर्ष बाद। फिर कहते हैं– बाबा, बड़ी भूल की जो शादी की, अब मैं कैसे छूटूँगी इनसे? परन्तु ऐसे थोड़े ही है बाबा जादू से कुछ कर देगा। सबसे जास्ती कन्या भाग्यशाली हैं। बाप कहते हैं– मैं अपना फर्ज ..... हूँ तुम ..... दुखी हो करके पुकारती हो तो बाप का फर्ज है बच्चों को मुक्ति–जीवनमुक्ति देना, और तो कोई पाय नहीं सकते; इसलिए मुक्तिदाता कोई नहीं। टाइटल बहुत लगाते हैं; परन्तु है बिलकुल राँग। अपन को श्री–2 108 जगतगुरु कहलाते रहते। सब थोड़े ही मानेंगे ये हमारा भगवान है; परन्तु मनुष्य की है बिल्कुल विनाश काले विपरीत बुद्धि। तुम्हारी प्रीत बुद्धि है। तुम बाबा–2 कहते रहते हो, मनुष्य थोड़े ही समझेंगे ..... अपने बाबा को याद करते हैं। तुम बच्चे जानते हो, अनेक बार बाबा ने हमको स्वर्ग का मालिक बनाया है। भारत के वर्ण भी मशहूर हैं। और कोई के वर्ण नहीं हैं। देवता वर्ण में, क्षत्रिय वर्ण में कितने–2 जन्म लिए, यह भी तुम जान गए हो। यह है ईश्वरीय जन्म। ऑस्पिशस कल्याणकारी जन्म। पतित–पावन बाप हमको राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। कहते हैं, सिर्फ मुझे याद करो। इसमें ही मेहनत है। अच्छा। सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ